

स्कूल में बंदूक लेकर पहुंचे ‘दबंग’ मास्टर जी लगाने लगे निशाना तो सहमे छात्र, प्रभारी प्रचार्य ने कराई एफआईआर

गुना (नप्र)। जिले के धरनावदा स्थित शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल में शिक्षक के हाथों में बंदूक देखकर लोग भयभीत थे। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद गुना पुलिस ने शिक्षक पर शिकंजा कसा है। प्रभारी प्रचार्य की शिकायत पर धरनावदा पुलिस ने शिक्षक पर एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। आरोपी शिक्षक मूल रूप से राजस्थान के कवाई (सालपुरा) का निवासी है।

ढाई महीने पुराना है वीडियो- पूरा मामला करीब ढाई महीने पुराना है, लेकिन वीडियो अब वायरल हो रहा है। इस वीडियो में शिक्षक विनोद साहू बिना किसी खोफ के स्कूल परिसर में सरेआम बंदूक से निशाना साधते हुए दिखाई दे रहा है। इसी दौरान वहां से स्कूल की प्रिंसिपल और कुछ अन्य लोग भी गुजरते हैं, लेकिन वह बेखोफ होकर हथियार लहराता रहता है। सहकर्मियों और स्थानीय नागरिकों की मानें तो आरोपी अक्सर दफ्तर और छात्रों पर धौंस जमाने और अपना रसूल दिखाने के लिए बंदूक लेकर स्कूल आता था।

7 अप्रैल की दोपहर मचाया था हड़कंप- थाने में



दर्ज कराई गई शिकायत के मुताबिक, यह खोफनाक वाक्या 7 अप्रैल की दोपहर करीब 1 बजे का है। आरोपी विनोद साहू हाथ में बंदूक लेकर अचानक स्कूल प्रांगण में दाखिल हो गया। परिसर में खुलेआम हथियार देखकर वहां मौजूद छात्र-छात्राएं और स्टाफ दहशत में आ गए। मामले की गंभीरता को देखते हुए जब मौके पर मौजूद प्रभारी प्राचार्य ममता सोनी, माध्यमिक शिक्षक चंद्रमोहन कुशवाहा और उच्च माध्यमिक शिक्षक अंजू गुप्ता ने उसे रोकने का प्रयास किया और समझाईश दी।

होर्मुज में 4 महीने से फंसे थे एलपीजी से लदे 2 टैंकर

● रास्ता खुला, मौका मिलते ही भारत की ओर हुए रवाना



कामयाब रहे। कॉन्फिडेंस पेट्रोलियम के सूत्रों के अनुसार, ये दोनों जहाज एक सप्ताह के भीतर भारत के बंदरगाह पर पहुंच जाएंगे। इसके अलावा, एक और बड़ी राहत यह है

● कप्तानों ने उठाया मौके का फायदा- कंपनी के चेयरमैन नितिन खारा ने बताया कि अमेरिका और ईरान के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन के बाद इस समुद्री रास्ते को कुछ समय के लिए खोला गया था। हमारे कप्तानों ने बेहद बहादुरी भरा कदम उठाया और इस छोटे से मौके का फायदा उठाकर जहाजों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, जिससे हमने राहत की सांस ली है। भारत के सबसे बड़े निजी एलपीजी बॉटलर्स में से एक, कॉन्फिडेंस पेट्रोलियम को इस महीने करीब 50,000 टन एलपीजी की जरूरत थी। युद्ध की शुरुआत में सप्लाई चेन टूटने के कारण कंपनी को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था, जिससे निपटने के लिए उन्होंने ये कदम उठाए- चीन जा रहे दो जहाजों को अतिरिक्त रकम चुकाकर भारत की तरफ मोड़ा गया, जिनमें 50,000 मीट्रिक टन एलपीजी थी। कंपनी ने आपूर्ति बनाए रखने के लिए अमेरिका से भी एलपीजी की स्पॉट खरीदारी की। घरेलू गैस के नए शिपमेंट्स के भारत पहुंचने से घरेलू बाजार पर बेहद सकारात्मक असर देखने को मिलेगा।

कि अल्जीरिया से 22,000 मीट्रिक टन एलपीजी लेकर आ रहा एक अन्य जहाज भी भारतीय समुद्री सीमा में प्रवेश कर चुका है और जल्द ही बंदरगाह पर लंगर डालेगा।

चीन और रूस से घिरा तो भारत को बना लिया ‘तीसरा पड़ोसी’

● ड्रैगन ने डराया तो ऐक्शन में एस जयशंकर, दिया बड़ा तोहफा



उलानबतार (एजेंसी)। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर सोमवार को मंगोलिया के दौर पर पहुंचे हैं। जयशंकर ने मंगोलिया के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की है और द्विपक्षीय संबंधों की समीक्षा की। उन्होंने मंगोलिया और भारत के बीच रिश्ते को भाई-बहन जैसा बताया। इस बातचीत में मुख्य फोकस विशाल तेल रिफाइनरी पर था जिसे भारत की मदद से मंगोलिया में बनाया जा रहा है। मंगोलिया की विदेश मंत्री के साथ मुलाकात के बाद जयशंकर ने कहा कि दोनों पक्षों ने क्षमता निर्माण, तकनीक, आर्थिक और व्यापारिक सहयोग, सप्लाई चेन, रक्षा और ऊर्जा सुरक्षा को लेकर बात की है। जयशंकर ने कहा कि मंगोलिया में बनाई जा रही तेल रिफाइनरी दोनों देशों के बीच भागीदारी के तहत सबसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है। जयशंकर ने बताया कि अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई दोनों ही देशों के बीच बातचीत में एक प्रमुख मुद्दा रहा।

भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता को चीन का खुला समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन के विदेश मंत्री वांग यी मंगलवार को दिल्ली में 16वीं ब्रिक्स राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने भारत के



साथ द्विपक्षीय संबंध मजबूत करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि चीन और भारत पड़ोसी देश हैं और ग्लोबल साउथ की प्रमुख अर्थव्यवस्था हैं, इसलिए उनके बीच बेहतर सहयोग होना चाहिए। बता दें कि भारत 22-23 जून 2026 को ब्रिक्स राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक की मेजबानी कर रहा है।

संक्षिप्त सनाचार

केंद्रीय मंत्री जॉर्ज कुरियन का इस्तीफा

● 21 जून को राज्यसभा कार्यकाल खत्म हुआ था

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय राज्य मंत्री जॉर्ज कुरियन ने मंत्रिपरिषद से इस्तीफा दे दिया है। राष्ट्रपति भवन ने मंगलवार को कुरियन के इस्तीफे की जानकारी दी। प्रेस रिलीज में बताया कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पीएम नरेंद्र मोदी की सलाह



पर उनका इस्तीफा स्वीकार किया है। हालांकि, इस्तीफे की वजह नहीं बताई गई है। 65 साल के कुरियन मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय और मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय में राज्य मंत्री के पद पर थे। वे अगस्त 2024 से मध्य प्रदेश से राज्यसभा सांसद थे। बतौर राज्यसभा सांसद 21 जून को ही उनका कार्यकाल खत्म हुआ था। भाजपा ने उन्हें फिर से उम्मीदवार नहीं बनाया था। कुरियन केरल में भाजपा के सीनियर नेताओं में एक हैं।

भवानीपुर सीट में सुरक्षित रखे जाएं चुनावी रिकार्ड

● कोलकाता हाईकोर्ट का बंगाल सरकार को सख्त आदेश

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाईकोर्ट ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल की भवानीपुर विधानसभा सीट की मतगणना से जुड़े सभी अहम सबूत सुरक्षित रखने का आदेश दिया। अदालत ने रिजल्ट में गड़बड़ी के आरोपों पर सुनवाई करते हुए



कहा कि ईवीएम, वीवीपैट, सीसीटीवी फुटेज और अन्य संबंधित रिकॉर्ड संरक्षित रखे जाएं। जस्टिस गौरांग कांत ने मतगणना केंद्र बने शेखावाटी मेमोरियल स्कूल के अंदर और बाहर लगे सभी सीसीटीवी कैमरों की फुटेज सुरक्षित रखने का भी निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा, जल्दतर पड़ने पर इन सभी साक्ष्यों की जांच होगी। अदालत की अनुमति के बिना इन्हें न तो मिटाया जाएगा, न बदला जाएगा, न नष्ट किया जाएगा और न ही इनके साथ किसी तरह की छेड़छाड़ की जाएगी। अदालत ने मामले में सभी संबंधित पक्षों को शामिल करने के आदेश दिए हैं।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर कांग्रेस का हमला

● जयराम रमेश बोले-ट्रंप को खुश करना बंद करें प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि के भारत दौरे का हवाला देते हुए मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को खुश करने की नीति बंद करनी चाहिए



आकर हस्ताक्षर नहीं करना चाहिए जिसका वर्तमान स्वरूप भारतीय हितों के प्रतिकूल दिखाई देता है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि अमेरिका के साथ जिस स्वरूप में व्यापार समझौते पर सहमति बनी है उसका जन्म-कर्मर, हिमाचल प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र सहित किसानों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

पॉलिटेक्निक, आकाशवाणी और किलोल पार्क चौराहा ‘प्रतिबंधात्मक क्षेत्र’ घोषित

धरना-प्रदर्शनों पर लगी रोक

भोपाल (नप्र)। भोपाल शहर के सबसे व्यस्त और महत्वपूर्ण मार्गों में से एक पॉलिटेक्निक चौराहा और उसके आस-पास के क्षेत्रों में अब किसी भी प्रकार के धरना, प्रदर्शन, हड़ताल या पुतला दहन कार्यक्रमों के आयोजन पर पूरी तरह से रोक लगा दी गई है। नगरीय पुलिस भोपाल के पुलिस आयुक्त संजय कुमार (भा.पु.से.) ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 (1) के तहत शक्तियों का प्रयोग करते हुए इस संबंध में एक प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है। यह आदेश 22 जून 2026 से आगामी 02 माह तक प्रभावी रहेगा।

इन प्रमुख क्षेत्रों में लागू रहेगा प्रतिबंध पुलिस आयुक्त के आदेश के अनुसार इन क्षेत्रों और उनके बीच के स्थानों को प्रतिबंधात्मक क्षेत्र घोषित किया है- पॉलिटेक्निक चौराहा आकाशवाणी चौराहा किलोल पार्क चौराहा इन चौराहों के मध्य स्थित सभी स्थान **क्यों लिया गया यह बड़ा फैसला?** प्रशासन द्वारा इस कड़े कदम को उठाने के पीछे मुख्य रूप से आम जनता की सुरक्षा और आपातकालीन सेवाओं को सुचारू रूप से चलाना है। आदेश में स्पष्ट किया गया है। **एकमात्र सुविधाजनक मार्ग** पॉलिटेक्निक चौराहा शहर के मुख्य मार्ग पर स्थित है, जो एयरपोर्ट, हमीदिया अस्पताल और गांधी मेडिकल कॉलेज जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण स्थलों पर आने-जाने का



एकमात्र सुगम माध्यम है। शहर में इसका कोई अन्य सुविधाजनक वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध नहीं है।

आपातकालीन सेवाओं में बाधा: इस मार्ग से एम्बुलेंस, फायर ब्रिगेड जैसी इमरजेंसी सेवाएं और विशिष्ट/अतिविशिष्ट व्यक्तियों का आवागमन होता है। यहाँ अक्सर होने वाले प्रदर्शनों के कारण यातायात बाधित होता था, जिससे मरीजों के जीवन पर संकट आने की संभावना बनी रहती थी।

आम जनता को परेशानी- आदि दिन विभिन्न समुदायों, संगठनों, राजनीतिक दलों और समितियों द्वारा अपनी मांगों को लेकर किए जाने वाले आंदोलनों से आम जनता को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। **एकपक्षीय आदेश जारी, उल्लंघन पर**

धार, बड़वानी, खरगोन, नर्मदापुरम में तेज बारिश

26 जिलों में भी अलर्ट; प्रदेश में सामान्य से 52 प्रतिशत कम पानी गिरा, 48 जिले पिछड़े

भोपाल (नप्र)। मानसून की रफ्तार धीमी होने से मध्य प्रदेश में जून का महीना अब तक सूखा बीता है। प्रदेश में सामान्य से 52 प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई, जिससे खरीफ फसलों की बोवनी प्रभावित हो रही है। हालांकि, मंगलवार को बड़वानी, खरगोन, नर्मदापुरम और धार जिले में तेज बारिश हुई। इससे मौसम सुहाना हो गया, लेकिन किसानों का कहना है कि बोवनी के लिए अभी और पानी की जरूरत है। प्रदेश में मानसून के एंटर होने की सामान्य तारीख 15 जून है, जिसे 8 दिन ज्यादा बीत चुके हैं। फ्लिहाल, अगले 2 से 3 दिन में मानसून आने का अनुमान जताया जा रहा है। हालांकि, जून के पूरे महीने प्री-मानसून का दौर चल रहा। इसके बावजूद पूर्वी हिस्से,

यानी जबलपुर, रीवा, सागर और शहडोल संभाग में औसत से 71 प्रतिशत कम बारिश हुई है। वहीं पश्चिमी हिस्सा यानी, भोपाल, इंदौर, उज्जैन, नर्मदापुरम, ग्वालियर-चंबल में औसत से 33 प्रतिशत कम पानी गिरा है। **जबलपुर समेत 4 जिलों में लू का अलर्ट, 26 जिलों में बारिश-** मौसम विभाग ने जबलपुर, मंडला, दमोह और उमरिया में हीटवेव का अलर्ट जारी किया है। वहीं, ग्वालियर, श्योपुर, मुर्ना, भिंड, दतिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौर, बालाघाट, सिवनी, पांडुरंगा, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, सागर, विदिशा, रायसेन, बैतूल, भोपाल, सीहोर, हरदा, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, इंदौर, आलीराजपुर और झाबुआ में तेज आंधी के साथ बारिश हो सकती है।

दूसरी ओर नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन, शाजापुर, अगर-मालवा, राजगढ़, गुना, अशोक नगर, शिवपुरी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, कटनी, सतना, मेहर, रीवा, मऊजंज, सीधी और सिंगरौली में गर्मी का असर रहने की संभावना है।

योगी सरकार तक पहुंची राममंदिर चढ़ावा चोरी की रिपोर्ट

● एसआईटी ने 20 पेज की रिपोर्ट में एफआईआर और ट्रस्ट को दोबारा गठित करने की सिफारिश की

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में एसआईटी ने मंगलवार को अपनी जांच रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंप दी। सूत्रों के मुताबिक, इसमें एफआईआर दर्ज करने और ट्रस्ट को दोबारा गठित करने की सिफारिश की गई है। किसी सीनियर अफसर को मंदिर का सीईओ नियुक्त करने का भी सुझाव है। डिटेल् जांच के लिए एसआईटी ने और समय मांगा है। रिपोर्ट गृह विभाग के एडिशनल चीफ सेक्रेटरी संजय प्रसाद को रिपोर्ट सौंपी गई है। टीम ने बताया कि 20 पन्नों की यह शुरुआती रिपोर्ट है। इसमें 150 लोगों से पूछताछ की डिटेल् है। सूत्रों के मुताबिक, एसआईटी ने पिछले 5 साल के चढ़ावे का ऑडिट कराने की भी सिफारिश

की है। चढ़ावे में अनियमितता रोकने के लिए सुझाव दिए हैं। ट्रस्ट के पदाधिकारियों की भूमिका पर सवाल उठाए हैं। सूत्रों के मुताबिक, राज्य सरकार रिपोर्ट केंद्रीय गृह मंत्रालय को भेजेगी। इसके बाद गृह मंत्रालय तय करेगा कि ट्रस्ट के किन सदस्यों को रखा जाए या हटाया जाए।

5 आरोपियों से 2 करोड़ रुपए की रिकवरी - राम मंदिर चोरी मामले में 5 आरोपियों लवकुश, अवनीश, अनुकल्प, करुण और रामशंकर उर्फ टिटू की निशानदेही पर 2 करोड़ रुपए की रिकवरी हो चुकी है। इसके अलावा, चंपत राय के करीबी टिटू के घर से सोना मिला था। शुरुआती अनुमानों के मुताबिक, चोरी 200 करोड़ रुपए से ज्यादा



की हो सकती है। राम मंदिर के चढ़ावा चोरी के मामले में श्रीराम सेना ने राम जन्मभूमि स्थाना पहुंचकर दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश सिंह ने प्रभारी निरीक्षक को ज्ञापन सौंपते हुए सेवादार अनिल मिश्रा समेत

अन्य सदस्यों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने और नारको टेस्ट कराए जाने की मांग की। दिनेश सिंह ने कहा कि मामले की निष्पक्ष जांच और दोषियों पर सख्त कार्रवाई से ही करोड़ों राम भक्तों की आस्था मंदिर के प्रति बनी रह सकेगी।

केजरीवाल बोले-

● अब तक चंपत राय को हटाय़ा क्यों नहीं गया- दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा- राम मंदिर से करोड़ों का चंदा चोरी हो गया। राम भक्तों में बहुत गुराह है और मन में कई सवाल हैं। आज मैं सरकार से पहला सवाल पूछ रहा हूं। पूरे राम मंदिर का कंट्रोल चंपत राय के हाथ में है। सबसे ज्यादा आरोप चंपत राय पर ही लग रहे हैं। उसे अब तक हटाय़ा क्यों नहीं गया? क्या इस बात का डर है कि अगर चंपत राय ने मुंह खोला, तो कई बड़े चेहरे बेनकाब हो जाएंगे।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस पर मुख्यमंत्री–प्रदेशाध्यक्ष ने दी श्रद्धांजलि

सीएम बोले-देश का विभाजन ऐतिहासिक भूल, भारत की एकता-अखंडता के लिए डॉ. मुखर्जी का बलिदान अविस्मरणीय

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आजादी के समय देश का विभाजन भारत के इतिहास की बड़ी भूल थी। उन्होंने कहा कि जिस दिन देश आजाद हुआ, उसी दिन विभाजन की नींव भी रख दी गई थी। विभाजन के दौरान 40 हजार से अधिक लोगों ने अपने प्राण त्याग दिए।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्र के लिए जीवन समर्पित करने वाले भारतीय जनसंघ के संस्थापक, श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी तिराहा पहुंचकर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संदेश में कहा कि राष्ट्र प्रथम के प्रति समर्पित प्रखर विचारधारा, देश की अखंडता के लिए उनका दृढ़ संकल्प सदैव प्रेरणा देता रहेगा। देश अनंतकाल तक डॉ.मुखर्जी का ऋणी रहेगा।

सीएम ने ये बात श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर मंगलवार को कही। उन्होंने कहा कि देश के विभाजन और षड्यंत्रों के खिलाफ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने मजबूती से आवाज उठाई थी। भारत की अखंडता और एकता के लिए उन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया। एक देश में दो विधान जैसी विसंगति को समाप्त करने का श्रेय भी डॉ. मुगुर्जी के संघर्ष को जाता है।

इससे पहले सीएम डॉ मोहन यादव ने बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की मौजूदगी में प्रदेश भाजपा कार्यालय के सामने पं श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। भाजपा



23 जून से 6 जुलाई तक अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित करेंगे। 23 जून श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान दिवस है वहीं 6 जुलाई को उनका जन्मदिन मनाया जाता है।

बृथ स्तर पर पुष्पांजलि कार्यक्रम- इस अभियान के दौरान सभी बृथों पर बृथ समिति के सदस्यों, प्राथमिक सदस्यों और शुभचिंतकों की उपस्थिति में 23 जून या 6 जुलाई को पुष्पांजलि कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यह कार्यक्रम बृथ अध्यक्ष के निवास परिसर में आयोजित किया जा सकता है, जहां डॉ. मुखर्जी का सुसज्जित

चित्र स्थापित कर उनके जीवन, व्यक्तित्व और राष्ट्रसेवा में योगदान पर संक्षिप्त भाषण दिया जाएगा।

जिला कार्यकर्ता सम्मेलन- सभी जिलों में जिला कार्यकर्ता सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा। इन सम्मेलनों में तीन अलग-अलग वक्ताओं द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सामाजिक एवं राजनीतिक योगदान, केंद्रीय मंत्री के रूप में उनकी भूमिका, और भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में उनके योगदान जैसे तीन प्रमुख विषयों पर उद्बोधन दिया जाएगा।

छात्र सम्मेलन युवा मोर्चा आयोजित करेगा

प्रमुख शैक्षणिक केंद्रों में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की स्मृति में छात्र सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम शैक्षणिक परिसरों (कैंपस) के बाहर आयोजित किए जाएंगे और इसमें भारतीय जनता युवा मोर्चा की अग्रणी भूमिका निभानी होगी।

नामकरण और प्रतिमा अनावरण

प्रत्येक नगर और शहर में किसी प्रमुख चौराहे, उद्यान (पार्क) अथवा मार्ग का नामकरण डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नाम पर किया जाएगा। इसके साथ ही, कई स्थानों पर उनकी प्रतिमा या चित्र का अनावरण भी किया जा सकता है।

चूंकि, मानसून पूरे देश में सक्रिय हो चुका है, इसलिए इस संस्मरण पक्ष के दौरान प्रत्येक बृथ पर सार्थक और प्रभावी रूप से बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान संचालित किया जाएगा।

सांगठनिक टोलियों का गठन

इस पूरे कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रत्येक प्रदेश में 5 सदस्यों की एक टोली गठित की जाएगी, जिसमें एक वरिष्ठ कार्यकर्ता को संयोजक बनाया जाएगा। इसी तरह प्रत्येक जिले में 4 सदस्यों की टोली और प्रत्येक मंडल स्तर पर 3 सदस्यों की टोली का गठन किया जाएगा। मध्य प्रदेश में इस कार्यक्रम के राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय और संचालन की जिम्मेदारी प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह संभाल रहे हैं।

घर आ रहा था गंद़ा पानी, शिकायतों के बाद भी नहीं हुई सुनवाई

सिवनी में सीएमओ मैडम को ही लेना पड़ा सीएम हेल्पलाइन का सहारा !

सिवनी (नप्र)। जिले की लखनादौन नगर परिषद में स्थानीय प्रशासनिक ढ़ों और शिकायत निवारण प्रणाली की पोल खेलने वाला एक दिलचस्प और हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां की तत्कालीन मुख्य नगरपालिका अधिकारी गीता वाल्मीकि को अपने ही घर में आ रहे दूषित पेयजल की समस्या से निजात पाने के लिए सीधे सीएम हेल्पलाइन का दरवाजा खटखटाना पड़ा। यह वाक्या स्थानीय प्रशासन की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़ेकरता हैकि जब शहर की व्यवस्था संभालने वाले पूर्व अधिकारी ही अपनी शिकायतें सामान्य तरीके से हल नहीं करवा पा रहे हैं, तो आम जनता की क्या स्थिति होगी।

वार्ड नंबर 4 का मामला- पूरा मामला लखनादौन नगर परिषद के वार्ड क्रमांक 4 का है, जहां सीएमओ गीता वाल्मीकि का निजी निवास



है। वर्तमान में वे जिले की ही छपरा नगर परिषद में सीएमओ के पद पर जिम्मेदारी संभाल रही हैं, लेकिन लखनादौन में घर होने के कारण वे यहीं निवास करती हैं। मिली जानकारी के अनुसार,

उनके घर में पिछले काफी समय से नलों के माध्यम से गंदे और प्रदूषित पानी की सप्लाई की जा रही थी। स्वास्थ्य के लिहाज से बेहद गंभीर इस समस्या को लेकर उन्होंने पहले नगर परिषद के संबंधित प्रभारियों और कर्मचारियों को मौखिक रूप से कई बार टोका और इसे दुरुस्त करने को कहा। पूर्व सीएमओ ने लखनादौन नगर परिषद के जिम्मेदार कर्मचारियों को पहले व्यक्तिगत तौर पर अवगत कराया था। जो अधिकारी खुद रोजाना सैकड़ों लोगों की समस्याओं का समाधान करवाते हैं, उन्हें अपनी बुनियादी जरूरत के लिए पेशान होना पड़ा। वर्तमान में छपरा में पदस्थ होने के बावजूद लखनादौन प्रशासन के ढीले रखेये से उन्हें यह कदम उठाना पड़ा। इस वाक्ये के बाद अब पूरे सिवनी जिले के प्रशासनिक हलकों में लखनादौन नगर परिषद की किरकिरी हो रही है।

पन्ना। पन्ना के अजयगढ़ क्षेत्र में एक महिला की हेयर डाई पीने से मौत हो गई। गंभीर हालत में महिला को पन्ना जिला अस्पताल से रीवा मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया था। लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। मृतका दो मासूम बच्चों की मां थी। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतका की पहचान अजयगढ़ थाना क्षेत्र

महिला को रीवा रेफर किया गया

कुछदर बाद जब उसकी जेठानी ने महिला को लगातार उल्टियां करते देखा, तो उन्हें अनहोनी का शक हुआ। जेठानी ने तुरंत इसकी सूचना पुनिया के पति सुनील अहिरवार को दी। परिजन आनन-फ़ानन में महिला को लेकर अजयगढ़ शासकीय अस्पताल पहुंचे, जहां से पन्ना और फिर रीवा रेफर किया गया था।

के ग्राम छतेनी निवासी पुनिया अहिरवार (26) पत्नी सुनील अहिरवार के रूप में हुई है। उसकी शादी करीब 5 वर्ष पहले हुई थी। पति सुनील अहिरवार मजदूरी का काम करते हैं।

फ़ोन चोरी होने के विवाद के बाद हेयर डाई पी

जानकारी के अनुसार, सोमवार को महिला का पूरा परिवार किशनपुर गांव में मामा के लड़के की शादी में शामिल होने गया था। शादी की खुशियों के बीच वहां महिला का मोबाइल चोरी हो गया। घटना को लेकर परिवार और महिला के बीच कहासुनी हुई थी। विवाद के बाद महिला ने सोमवार दोपहर को ही शादी से अकेले घर छतेनी लौट आई, जबकि बाकी परिजन बाद में पहुंचे। घर लौटने के बाद सोमवार को ही महिला ने कमरे में रखी बालों में लगाने वाली हेयर डाई पी ली।

पहले भी की थी आत्महत्या करने की कोशिश

इस असमय मौत से महिला के दो छोटे बच्चों के सिर से मां का साया उठ गया। उसका बड़ा बेटा शिवम सिर्फ 3 साल का है और छोटा बेटा बाबू सिर्फ 7 महीने का है। पति सुनील ने एक और चौंकाने वाला खुलासा करते हुए बताया कि पत्नी ने करीब 2 साल पहले भी अज्ञात कारणों के चलते जहर खा लिया था। हालांकि, उस समय सही समय पर इलाज मिल जाने के कारण डॉक्टरों ने उसकी जान बचा ली थी। लेकिन इस बार हेयर डाई का जहर जानलेवा साबित हुआ। घटना के बाद आज मंगलवार दोपहर करीब 1:30 बजे पुलिस ने पंचनामा की कार्रवाई पूरी कर मृतका के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

मैहर में चलती बाइक पर गिरा पेड़, दो की मौत,दो घायल कटनी से दर्शन करने के लिए आए थे, रास्ता बटक गए



मैहर (नप्र)। मैहर में देहात थाना क्षेत्र के ग्राम बरहिया के पास मंगलवार को हुए एक दर्दनाक सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि दो युवतियां गंभीर रूप से घायल हो गईं। हादसा उस समय हुआ जब सड़क किनारे काटा जा रहा सीसम का पेड़ ट्रैक्टर की मदद से खींचते समय अचानक सड़क पर गिर गया और बाइक सवारों को अपनी चपेट में ले लिया।

दर्शन के लिए जा रहे थे चार युवक-युवतियां- जानकारी के अनुसार, कटनी जिले के रीठी थाना क्षेत्र के इन्दास गांव निवासी चार युवक-युवतियां एक ही मोटरसाईकिल से मैहर स्थित मां शारदा मंदिर के दर्शन के लिए आ रहे थे। रास्ता भटकने के कारण वे अमरपाटन क्षेत्र के बरहिया गांव के पास पहुंच गए।

इसी दौरान सड़क किनारे सीसम का पेड़ काटा जा रहा था, जिसे ट्रैक्टर की मदद से खींचा जा रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, खींचने के दौरान पेड़ अचानक अनियंत्रित होकर सड़क पर गिर गया और सीधे बाइक पर जा गिरा।

एक की मौके पर और एक की इलाज के दौरान मौत- हादसे में चारों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने तुरंत राहत कार्य करते हुए सभी को पेड़ के नीचे से निकाला और सिविल अस्पताल मैहर पहुंचाया। अस्पताल पहुंचने से पहले रागिनी कुशवाहा (18 वर्ष), पिता सूरज कुशवाहा की मौत हो चुकी थी। वहीं इलाज के दौरान अमित कुशवाहा (21 वर्ष), पिता द्वाराका प्रसाद कुशवाहा ने भी दम तोड़ दिया।

सड़क किनारे खड़े तीन लोगों को कार ने रौंदा, मौत

मुरैना में गाड़ी छोड़कर भागा ड्राइवर, इलाज के दौरान तीनों ने तोड़ा दम

मुरैना (नप्र)। अंबाह के किशनपुरा रोड स्थित नेशनल हाईवे-552 पर सोमवार देर रात एक तेज रफ़तार कार ने सड़क किनारे खड़े तीन लोगों को टक्कर मार दी। हादसे में तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायलों को पहले अंबाह अस्पताल ले जाया गया, जहां से उनकी गंभीर हालत को देखते हुए जिला अस्पताल रेफर किया गया। इलाज के दौरान मंगलवार सुबह जिला अस्पताल में तीनों की मौत हो गई। पुलिस ने तीनों शवों का पोस्टमॉर्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है।

सड़क किनारे खड़े थे तभी कार ने टक्कर मारी: अंबाह क्षेत्र में पोरसा रोड स्थित ग्राम किशनपुरा के पास नेशनल हाईवे-552 पर सड़क किनारे खड़े तीन लोगों को एक कार ने टक्कर मार दी। हादसे में कुन्हेर सिंह (60) पिता निहल सिंह, रामहेत (55) पिता रामस्वरूप छरी और पुष्पेंद्र (55) पिता अहिवरन राजावत, निवासी पलना गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा गया, जहां इलाज के दौरान तीनों की मौत हो गई।

बताया गया है कि कारके ड्राइवर ने लापरवाही

स्लॉटर हाउस फिर खोलने की तैयारी पर विवाद बजरंग दल का विरोध, कहा-नगर निगम ने उसी पक्ष से मांगा अभिमत जिस पर लगे गंभीर आरोप

भोपाल (नप्र) । भोपाल में बंद पड़े स्लॉटर हाउस को दोबारा शुरू करने की तैयारी को लेकर विवाद गहरा गया है। इस मामले में नगर निगम द्वारा उसी पक्ष से अभिमत मागे जाने पर बजरंग दल ने कड़ा विरोध दर्ज कराया है। संगठन ने इसे प्रशासनिक संवेदनहीनता बताते हुए उा आंदोलन की चेतावनी दी है। **कोर्ट में निगम के वकील ने नहीं जताई आपत्ति-** बजरंग दल के अनुसार असलम चमड़ा की कंपनी लाइव स्टॉक फूड प्रोसेसर प्राइवेट लिमिटेड द्वारा स्लॉटर हाउस खोलने के लिए हाईकोर्ट जबलपुर में याचिका दायर की गई थी। 10 जून को जारी आदेश में यह उल्लेख किया गया कि निगम की ओर से उपस्थित वकील ने याचिकाकर्ता की प्रार्थना पर कोई आपत्ति नहीं जताई। संगठन का आरोप है कि यह रखैया स्लॉटर हाउस को दोबारा खोलने के लिए मौन सन्मति जैसा प्रतीत होता है।



26 टन गौमांस बरामदगी का मामला फिर चर्चा में- संगठन ने उस पुराने मामले का भी हवाला दिया, जिसमें इसी स्लॉटर हाउस से 26 टन गौमांस जब्त किया गया था। बजरंग

दल का दावा है कि यह करीब 250 गावों के बराबर है। ऐसे गंभीर आरोपों के बावजूद उसी इकाई को दोबारा संचालन की अनुमति देने की प्रक्रिया पर सवाल उठाए जा रहे हैं।

इंदौर में गैस पाइपलाइन में ब्लास्ट, 4 लोग झुलसे

इममें एक महिला भी, पार्षद करा रहा था

बोरिंग, पाइप फटने से गैस लीक

इंदौर (नप्र)। इंदौर में मंगलवार को अर्वांतिका गैस पाइपलाइन में ब्लास्ट हो गया। घटना विजय नगर थाना क्षेत्र के सुमन नगर जैन मंदिर के पास की है। हादसे में एक व्यक्ति विजय पटेल समेत 4 लोग झुलस गए। इनमें एक महिला भी शामिल है। जिस जगह ब्लास्ट हुआ है, वहां पर स्थानीय पार्षद बालमुकुंद सोनी द्वारा बोरिंग कराई जा रही थी।

हादसे के बाद उठी आग की लपटें- सभी घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर उपचार शुरू कराया गया। सूचना मिलते ही पुलिस, फायर ब्रिगेड और राहत दल मौके पर पहुंच गए तथा क्षेत्र की घेराबंदी कर स्थिति को नियंत्रित किया गया। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि इलाके में बोरिंग का कार्य कराया जा रहा था। इसी दौरान गैस पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो गई, जिससे गैस रिसाव शुरू हुआ और बाद में विस्फोट हो गया।

धमाके के कारणों की जांच शुरू- घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और संबंधित विभागों की टीम मौके पर पहुंच गई। क्षेत्र को सुरक्षित कर गैस स्प्लाई और

पाइपलाइन की स्थिति की जांच की जा रही है। प्रारंभिक तौर पर विस्फोट के कारणों का पता नहीं चल सका है। अधिकारियों ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

इलाके में दहशत का माहौल-



अचानक हुए धमाके के बाद आसपास के रहवासी घरों से बाहर निकल आए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार विस्फोट काफी तेज था, जिससे कुछ समय के लिए पूरे क्षेत्र में भय और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। प्रशासन ने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने और सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील की है। रहवासियों ने बताया कि वाटर रिटार्जिंग पार्षद बालमुकुंद सोनी द्वारा करवाया जा रहा था।

संपादकीय

फुटपाथ पर चलना मौलिक अधिकार !

फुटपाथ पर पैदल चलना एक सामान्य सी बात लग सकती है, लेकिन आज भारत में ज्यादातर शहरों में पैदल राहगीरों के लिए बने फुटपाथ भी अतिक्रमण का शिकार हो रहे हैं। इन पर भड़कले से गुमतियां तन रही हैं, ठेले लग रहे हैं तो कहीं झुगियां भी बन गई हैं। सरकारी फुटपाथों पर हो रहे इन अतिईक्रमणों का अनदेखा कर रही हैं। परिणामस्वरूप आज कई शहरों में फुटपाथ पर चलने की जगह राहगीरों को मुख्य सड़क पर चलना पड़्ठा रहा है और कई बार वो हदसे का शिकार हो रहे हैं। इसी संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले में साफ कहा हैकि फुटपाथ पर चलना नागरिकों का मौलिक अधिकार है। और सड़कों पर गाड़ियों से पहले आपका हक है। देश की सर्वोच्च अदालत ने इस बात को माना है कि फुटपाथों पर अतिक्रमण केवल यातायात की समस्या नहीं, बल्कि संविधान, गरिमा और जीवन के अधिकार से जुड़ा प्रश्न है। कोर्ट ने कहा कि हर सड़क के किनारे सुरक्षित फुटपाथ उपलब्ध करने, उनका रखरखाव करने और अतिक्रमण से मुक्त रखने की संवैधानिक जिम्मेदारी सरकार की है। यदि इस अधिकार का उल्लंघन होता है तो नागरिक अदालत से मुआवजा और अन्य कानूनी राहत भी मांग सकते हैं। यह फैसला केवल सड़कों के डिजाइन को नहीं, बल्कि शासन की प्राथमिकताओं को बदलने वाला भी है। यह उन करोड़ों भारतीयों के सम्मान, सुख्शा और बराबरी के अधिकार की संवैधानिक घोषणा है, जिनकी आवाज अब तक ट्रैफिक के शोर में दब जाती थी। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने बरसों को इस लाचारी को केवल यातायात की समस्या नहीं, बल्कि सोधे इंसान के आत्मसम्मान और संविधान से जुड़ा यह एक ऐसा फैसला है जो भारतीय सड़कों की पूरी परिभाषा को हमेशा के लिए बदल देगा। न्यायमूर्ति पामिदियंभट नरसिम्हा और न्यायमूर्ति अतुल शरच्चंद्र चांवरुकर की पीठ ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा कि पैदल चलने का अधिकार संविधान के भाग-3 में दिए गए मौलिक अधिकारों का हिस्सा है। यह अधिकार संविधान के अनुच्छेद 19(1)(डी) (आवागमन की स्वतंत्रता), अनुच्छेद 19(1)(ए), 19(1)(बी), 19(1)(सी) तथा अनुच्छेद 21 (जीवन के अधिकार) से जुड़ा है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि सड़क है तो उसके साथ सुरक्षित फुटपाथ होना भी अनिवार्य है। यह जिम्मेदारी शहरी विकास प्राधिकरणों, नगर निगमों, नगरपालिकाओं और पंचायतों की है। इन संस्थाओं को फुटपाथों का निर्माण, रखरखाव और अतिक्रमण से सुख्शा सुनिश्चित करनी होगी, क्योंकि पैदल चलना समानजनक और सुरक्षित जीवन का अभिन्न हिस्सा है। नागरिकों को सुरक्षित फुटपाथ उपलब्ध नहीं कराया जाता या उसके इस अधिकार का उल्लंघन होता है, तो वह संविधान और अन्य कानूनों के तहत अदालत का दरवाजा खटखटा सकता है। वह मुआवजा और अन्य कानूनी राहत पाने का भी हकदार होगा। यह अधिकार मोटर वाहन अभिनियम, 1988 के तहत मिलने वाले उपायों से अलग और स्वतंत्र होगा। कोर्ट ने अपना काम कर दिया और पूरी दमदारी से किया। लेकिन असली सवाल यह है कि सरकार और स्थानीय संस्थाएं इस पर कितनी गंभीरता से अमल करेंगी। दुर्भाग्य से फुटपाथों पर अतिक्रमण करवाने और गुमटी, ठेले आदि लगवाने में सत्ता पक्ष और बाहुलियों का ही हाथ होता है। ये लोग पैसा लेकर लोगों से यह सब करवाते हैं। इस कमीशन से खाली मोटी कमाई होती है। यहां तक पहुंचिय अथवा नगरीय निकायों द्वारा कारवाई किए जाने पर यकीन फुटपाथ पर अवैध गुमटी अथवा ठेले लगाने वालों को बचाने की गारंटी भी लेते हैं। हालांकि इस तरह फुटपाथ पर दुकानें लगाना का एक मानवीय पक्ष भी है। क्योंकि यह सोधे तौर पर लोगों के रोजगार से भी जुड़ा है। लेकिन इसकी जगह राहगीरों से फुटपाथ छिन लिए जाएं और उन्हें जान जोखिम में डाल कर सड़कों पर चलना पड़्ठा, इसे तो सही नहीं ठहरया जा सकता।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक ‘नृप’

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।



साल 2025 में एशिया के अनेक देशों ने भीषण गर्मी की ऐसी मार झेली, जिसने जलवायु परिवर्तन के खतरे को एक बार फिर दुनिया के सामने स्पष्ट कर दिया। भारत, चीन, थाईलैंड और दक्षिण-पूर्व एशिया के कई हिस्सों में तापमान ने नए रिकॉर्ड बनाए। भारत के कई शहरों में पारा 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। खेतों में फसलें झुलसने लगीं, बिजली की मांग अचानक बढ़ गई और अस्पतालों में हीट स्ट्रोक के मरीजों की संख्या बढ़ने लगी। इसी दौरान विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) की रिपोर्ट ने चेतावनी दी कि एशिया दुनिया के उन क्षेत्रों में शामिल है, जहां तापमान सबसे तेज गति से बढ़ रहा है। यह केवल एक मौसम संबंधी घटना नहीं, बल्कि आने वाले समय की गंभीर तस्वीर है। यह संकेत है कि यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो जलवायु संकट मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन सकता है।

जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान का संबंध आज किसी से छिपा नहीं है। पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और इसके पीछे सबसे बड़ा कारण मानवीय गतिविधियां हैं। औद्योगिकीकरण, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग, जंगलों की कटाई और अनियंत्रित शहरीकरण ने वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड, मिथेन तथा अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ा दी है। ये गैसें सूर्य से आने वाली ऊष्मा को पृथ्वी के वातावरण में रोककर रखती हैं, जिसके कारण धरती धीरे-धीरे गर्म होती जा रही है। वैज्ञानिक वर्षों से बीमार लोग इसके प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। विश्व स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि यदि तापमान में वृद्धि के गंभीर परिणाम सामने आएंगे। दुर्भाग्य से दुनिया ने इन चेतावनियों को उतनी गंभीरता से नहीं लिया, जितनी आवश्यकता थी।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन की हालिया रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1991 से 2025 के बीच एशिया में तापमान वृद्धि की दर 1961 से 1990 की तुलना में लगभग दोगुनी रही है। यह तथ्य बताता है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य का खतरा नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता बन चुका है। वर्ष 2025 को अब तक के सबसे गर्म वर्षों में गिना जा रहा है। बढ़ते तापमान का असर केवल मौसम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, कृषि, जल

केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं है तापमान का संकट

संसाधनों और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है।

सबसे पहले यदि कृषि क्षेत्र की बात करें, तो तापमान वृद्धि का सीधा प्रभाव खाद्य सुरक्षा पर पड़ रहा है। अत्यधिक गर्मी और अनियमित वर्षा के कारण फसलों की उत्पादकता घट रही है। गेहूं, धान और मक्का जैसी प्रमुख फसलें तापमान में छोटे बदलावों के प्रति भी संवेदनशील होती हैं। जब गर्मी सामान्य सीमा से अधिक बढ़ जाती है, तो फसल की वृद्धि प्रभावित होती है और उत्पादन कम हो जाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है। यदि खाद्यान्न उत्पादन प्रभावित होता है, तो इसका असर केवल किसानों पर नहीं, बल्कि पूरे समाज पर पड़ता है। खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ती हैं और गरीब वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होता है।

जल संकट भी तापमान वृद्धि का एक बड़ा परिणाम है। बढ़ती गर्मी के कारण नदियों, झीलों और जलाशयों का जलस्तर तेजी से घटता है। हिमालय के ग्लेशियर, जिन्हें एशिया का जल भंडार कहा जाता है, तेजी से पिघल रहे हैं। प्रारंभिक वर्षों में इससे बाढ़ का खतरा बढ़ता है, लेकिन लंबे समय में जल उपलब्धता कम हो जाती है। करोड़ों लोगों की पेयजल और सिंचाई की जरूरतें इन हिमनदों पर निर्भर हैं। यदि इनका क्षरण इसी गति से जारी रहा, तो भविष्य में जल संकट और भी गंभीर रूप ले सकता है।

बढ़ते तापमान का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर दिखाई देता है। हीट वेव यानी लू की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। अत्यधिक गर्मी से हीट स्ट्रोक, निजलीकरण, हृदय रोग और श्वसन संबंधी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। बुजुर्ग, बच्चे और पहले से बीमार लोग इसके प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। विश्व स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि यदि तापमान वृद्धि की वर्तमान गति जारी रही, तो गर्मी से होने वाली मौतों की संख्या आने वाले दशकों में कई गुना बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त गर्म जलवायु

मलेरिया, डेंगु और अन्य संक्रामक रोगों के प्रसार को भी बढ़ावा देती है।

प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति भी तापमान संकट का एक महत्वपूर्ण पहलू है। समुद्र का तापमान बढ़ने से चक्रवात अधिक शक्तिशाली हो रहे हैं। कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़ आ रही है, तो कहीं लंबे समय तक सूखा पड़ रहा है। एशिया के कई देशों में हाल के वर्षों में आई बाढ़ और चक्रवातों ने लाखों लोगों को प्रभावित किया है। इन आपदाओं से केवल आर्थिक नुकसान नहीं होता, बल्कि लोगों का जीवन, आजीविका और सामाजिक स्थिरता भी प्रभावित होती है। जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाली ये आपदाएं विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से बड़ी चुनौती हैं, क्योंकि उनके पास संसाधन सीमित होते हैं। बढ़ते तापमान का आर्थिक प्रभाव भी अत्यंत व्यापक है। जब प्राकृतिक आपदाएं बढ़ती हैं, तो सरकारों को राहत और पुनर्वास पर भारी खर्च करना पड़ता है। कृषि

उत्पादन में कमी, उद्योगों पर प्रभाव और श्रमिकों की उत्पादकता में गिरावट आर्थिक विकास को धीमा कर देती है। अत्यधिक गर्मी में निर्माण, परिवहन और अन्य बाहरी कार्यों में लगे श्रमिकों की कार्यक्षमता घट जाती है। इससे उत्पादन लागत बढ़ती है और अधिक गतिविधियां प्रभावित होती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाला आर्थिक नुकसान अब अरबों डॉलर में आंका जाने लगा है।

जैव विविधता पर भी तापमान वृद्धि का गंभीर असर पड़ रहा है। अनेक पशु-पक्षी और वनस्पतियां अपने प्राकृतिक आवास खो रहे हैं। समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र विशेष रूप से प्रभावित हो रहा है। समुद्र के गर्म होने से प्रवाल भित्तियां नष्ट हो रही हैं, जिन्हें समुद्र के वर्षावन कहा जाता है। जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ रही हैं, जिससे वन्यजीवों का अस्तित्व संकट में पड़ रहा है। यदि जैव विविधता का यह नुकसान जारी रहा, तो पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ सकता है और मानव जीवन भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होगा। अब सवाल है कि जब खतरे इतने स्पष्ट हैं, तब भी प्रभावी कदम क्यों नहीं उठाए जा रहे



क्या नजीर की माँब लिचिंग बन पाएगी नजीर

सामयिक

डॉ.संजीव कुमार

लेखक सामाजिक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं।

14 जून को माँब लिचिंग के इतिहास में पहली मध्य प्रदेश के सिवनी मालवा के जिला न्यायालय द्वारा एक साथ 14 दोषियों को उम कैद की सजा सुनाई गई है। मुकदमे के निष्पत्त्यायाथीश तबस्सुम खान के द्वारा सुनाया गया है। चूँकि मामला हिंदू मुस्लिम पक्ष से जुड़ा है और निर्णय एक मुस्लिम महिला द्वारा सुनाया गया है जिसका तथाकथित गौरवक्षक समाज सोशल मीडिया तथा अन्य तरीकों से विरोध कर रहा है वहीं संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करने वाले लोगों ने इस निर्णय का स्वागत किया है।

बात 3 अगस्त 2022 की है। नजीर अहमद अपने दो साथियों के साथ महाराष्ट्र से अपने दूक में 25 से 30 गाय और बकड़े लेकर उन्हें बाजार में बेचने (व्यवसायिक) के लिए निकले थे। मध्य प्रदेश के नर्मदा पु्रम में रात्रि लगभग दो से तीन बजे तथाकथित गौरवक्षक उनके ट्रक को घेर कर रोक लेते हैं और सदैह की बुनियाद पर तीनों को पीटने लगते हैं तथा उन्हें जोर-जोर से धार्मिक नारे लगाने के लिए कहते हैं और खुद ही इसका वीडियो भी बनाते हैं और समाज में इसका प्रचार प्रसार भी करते हैं। दर्जनों लोगों द्वारा हिंसक मारपीट की वजह से अंततः 55 वर्षीय नजीर को कुड़हिनो बाद अस्पताल में मृत्यु हो जाती है। अब लगभग चार वर्ष पश्चात् इसका निर्णय आता है जिसकी चारों तरफ चर्चा हो रही है।

सभी 14 अपराधी बहुत ही सामान्य परिवार से है। यह सभी हिंदू राष्ट्र और गौ रक्षा के नाम पर अंततः अपना जीवन तो बर्बाद कर ही चुके हैं उसके साथ-साथ अपने परिवार का भी जीवन बर्बाद कर रहे हैं। यह समाज के ऐसे नवयुवकों में से हैं जो तर्क का विवेक खो चुके हैं। इनके पास स ही कोई अच्छी शिक्षा है और ना ही इतनी संपति जिसके दम पर यह अच्छ जीवन जी सके। कमोबेश हिंदू राष्ट्र और गौ रक्षा के नाम पर जितने भी नवयुवक इस तरह का अपराध कर चुके हैं या कर रहे हैं यह सभी साधारण परिवार से और तथाकथित उच्च

जातियों द्वारा ही बरगलाए गए हैं। पिछले एक दशक से माँब लिचिंग के मामले ने देश और दुनिया का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। इसके पहले ऐसे शब्दों का पहले कभी प्रयोग नहीं था। ऐसा नहीं था कि इससे पहले भारत में कोई अपराध नहीं होते थे या फिर इस तरह की हत्याएं नहीं होती थी। देश में इन घटनाओं से पहले भी बड़े-बड़े अपराध और सामूहिक हत्याएं हुईं हैं। बेल्छी कांड, हासिमपुर हत्याकांड, लखमनपुर बलाह, खेरलाजी हत्याकांड जैसे बड़े-बड़े सामूहिक नरसंहार हुए हैं पर लिचिंग का मामला इनसे अलग है। क्योंकि पूर्व में हुए सब अपराध जाति और मजहब की दुर्भावना से होते थे पर अब ‘गाय रक्षा’ के नाम पर होने वाले इस जातीय तथा धार्मिक विद्वेष से किए गए इस अपराध ने समाज में एक नई भाषा को जन्म दिया हैजिसे आज हम माँब लिचिंग कहते हैं। यानी अंधी भीड़ द्वारा बेवजह किसी की निर्मम हत्या।

पिछले एक दशक में गौ रक्षा के नाम पर इतने जघन्य अपराध हुए हैंजिनके वीडियो और फोटो देखकर हमारे कलेजे दहल जाते हैं। मन में यही सवाल होता है कि आखिर यह लोग कौन हैं, क्या उनके परिवार और समाज ने इन्हें खुला इ्ट्ट दे रखा हैऐसा अपराध करने के लिए? और अपराध भी ऐसा कि खुद अपराधी मजे से हिंसा करते हैं और उसका वीडियो भी वायरल करते हैं। इन लोगों के लिए कानून जैसे मसाक बन चुका है। ऐसा इसलिए है कि इन अपराधों के बाद यह लोग कुछही महीनो में बरी हो जाते है और तथाकथित इनके गौरवक्षक समाज द्वारा इनका फूल माला से स्वागत किया जाता है । दरअसल गौ रक्षा अथवा गौ सेवा जैसा इनका कोई कृत्य नहीं होता। इनके आकाओं को मुसलमानों और दलितों के नाम पर भड़काने तथा लड़ाने के लिए एक हथियार चाहिए। जिसके लिए यह कभी गाय तो कभी गंगा का इस्तेमाल कर रहे हैं। अगर गाय की यह सचमुच सेवा करना चाहते हैया उसकी रक्षा करने का इन्होंने बिड़ा उठया हैतो पिछले 10 सालों का आंकड़ा उठा कर देख ले जितनी दुर्दशा पिछले 10 सालों में गायों की हुई है उतना भारत के इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था।

अभी ताजा मामला जैसलमेर के राजस्थान का है जहां हजारों गायों के भूख और बीमारी से मरने की खबर ने पूरे देश को हिला दिया था। जनवरी में चंडीगढ़ में 100 गायों की मौत हुई, छत्तरपुर में 50 गाय मरी, भीमपुर राजस्थान में सैकड़ों से ज्यादा गायें मरी, 2024 -25 में श्रावस्ती और ललितपुर में

सैकड़ो गायों के मरने से उत्तर प्रदेश में हड़कंप मच गया था। यह सब मौते प्रशासनिक देखरेख और गौशालाओं में हुई है जहां के लिए सरकार विधिवत बजट पास कर रही है।इसके अतिरिक्त सड़कों,गलियों में जो लाशों गायें भूख,बीमारी,से दर दूधर भटक रही है उसका तो कोई हिसाब ही नहीं। अगर गौ रक्षो तथा इसके नाम पर राजनीति करने वाले लोगों को जरा भी इनकी चिंता है तो सचमुच उनके लिए उचित प्रबंध करें। और इसके लिए किसी दिखावे तथा होामे की भी जरूरत नहीं है। बस जो लोग भी अपने आप को हिंदू मानते हैं, इन गायों को दया के नाम पर दो रोटी देते हैं वे सभी इन्हें अपने घर में पाले इनकी सेवा करें। शनिवार और सोमवार को दो गुड़ और दो रोटी से इनका पेट नहीं भरने वाला।

अब लौटते हैं माँब लिचिंग के मामले पर। 2015 में मोहम्मद अखलाख का मामला आ शायद भूल गए हों उनके परिवार पर गौ मांस खाने का झूठा आरोप लगा करके ग्रामीणों ने उन्हें पीट-पीट कर मार डाला। 2017 में राजस्थान के अलवार में पहलू खान को गौ तस्करी के नाम पर भीड़ द्वारा पीट-पीट कर हत्या कर दी गई। 2017 में हरियाणा की एक लोकल ट्रेन में 16 वर्षीं जुनैद खान को भी इसी तरह की अफवाह की वजह से मार दिया गया था। झारखंड में भी बच्चा चोरी के नाम पर इसी प्रकार मुसलमानों की लिचिंग की गई थी। 2002 में हरियाणा की भी पांच दलितों की गौ रक्षकों ने कुछ इसी प्रकार के मामले में हत्या की थी। उन कांड भी इसी प्रकार का मामला है। इन सभी मामलों में हजारों से ज्यादा लोग दोषी और अपराधी है, इनमें से ज्यादातर लोग आज अपना सामान्य जीवन जी रहे हैं।

पर नजीर के इस मुकदमे ने माँब लिचिंग केस को एक नया मोड़ दे दिया है। देश में एक आशा का सुजन होते दिखावे दे रहा है।क्योंकि भीड़ द्वारा बढ़ते हुए ऐसे अपराध को रोकने में लिच भारत में 1 जुलाई 2024 से लागू भारतीय न्याय संहिता में माँब लिचिंग को पहली बार अलग अपराध के रूप में मान्यता दी गई है। धारा 103(2) ब्रह्म के अनुसार जब 5 या अधिक व्यक्तिओं का समूह मिलकर नस्ल, जाति, समुदाय, लिंग, जन्म स्थान, भाषा, व्यक्तित्व विश्वास या किसी अन्य आधार पर हत्या करता है, तो इसे माँब लिचिंग माना जाता है। जज तबस्सुम खान ने इसी कानून के हवाले से नजीर के दोषियों को उमकैद की सजा सुने है।अब देखना ये हैकि क्या नजीर का यह मामला एनी माँब लिचिंग के लिए भी एक ‘नजीर’ बन सकता है।

मंदिरों का भी होता है पुनर्जीवन

विरासत

आशीष प्रताप मावई

लेखक माखनतार बुद्धी राष्ट्रिय पद्मश्रीिता एवं संवार विशिष्टतावर के पद्मश्रीिता के विचार्यों हैं।

यह उन 206 मंदिरों की कहानी है, जो मुरैना जिले के हेडकार्टर से 25 किलोमीटर दूर चंचल की झाड़ियों में बसे पहावली गाँव में स्थित हैं। एएसआई द्वारा इन 206 मंदिरों में से लगभग 100 मंदिरों को पुनर्जीवित कर दिया गया है। छठी से नौवीं शताब्दी के बीच गुर्जर-प्रतिहार राजाओं द्वारा निर्मित ये बटेधर मंदिर, खजुराहो के मंदिर समूह से भी लगभग 200 वर्ष पुराने हैं।

इन मंदिरों के नष्ट होने की दस्तावं बड़ी अजीब है। कुछ पुरातत्वविदों का यह विचार है कि 13 वीं शताब्दी में आए किसी भयानक तूफान या भूकंप के कारण ये मंदिर मिट्टी में मिल गए थे। वहीं, कई इतिहासकार इसके उलट मानते हैं कि इस्तुतिमिश जब अपनी सेना लेकर दिल्ली से खालियर की ओर जा रहा था, तो रास्ते में उसने इन मंदिरों को तहस-नहस कर दिया था। लेकिन मेरा व्यक्तिगत तर्क यह है-अगर इस इलाके में कोई भीषण तूफान या भूकंप आया होता, तो 10वीं शताब्दी में बनाई गई गाँव मेंस्थित ‘गढ़ी पढ़वलकी’ भी नष्टहो जाती; जबकि गढ़ी का बाहरी ढांचा आज भी एक स का तस खड़ा है। हाँ, यह जरूर है कि उसके अंदर के मंदिर और मूर्तियाँ पूरी तरह खंडित हैं।

इसके प्रमाण बगल के ऐतिहासिक गाँव कुंतलपुर जो अब कुतवार है में भी मिलते हैं। यह माता कुंती का मायका है, जहाँ उन्हें सूर्य-पुत्र कर्ण की प्राप्ति हुई थी और उन्होंने कर्ण को यहीं बहने वाली आसन नदी में बहाया था। इस गाँव में भी प्राचीन ऐतिहासिक ढांचे आज तक सुरक्षित खड़े हैं। इन बिखरे हुए मंदिरों के एक-एक ईंट-पत्थर को जोड़कर इन्हें पुनर्जीवित करने का श्रेय एएसआई के के.के. मोहम्मद को जाता है।

मंदिर इतनी बड़ी संख्या में हैं कि देखने से लगता है मानो यह ‘मंदिरों का कुंभ’ हो। इतनी बड़ी संख्या को देखकर यह अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि यह स्थान कोई महान तीर्थ रहा होगा।

मंदिर परिसर में दो पानी से लबालब भरें कुंड भी हैं जिन्हें एएसआई ने खोजा है; तीर्थयात्री संभवतः इन कुंडों में स्नान कर मंदिर में पूजा-अर्चना करते होंगे। सुबह और शाम आपको प्रांगण में मोर पंख पसारकर नाचते हुए दिख जायेंगे। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो वे इन मंदिरों को निहारकर कह रहे हों- ‘चिता मत करो, मुझरा निकट भविष्य तुम्हारे

अतीत जैसा ही वैभवशाली होगा।’

हमारा समाज अपनी सभ्यता को भुलाकर आज किस मुबने पर खड़ा है? बटेधर का सिर और आधा बड़ु अभी भी ज़मीन पर खोल-बताशों की तरह मूर्तियों के रूप में बिखरा है।

हमारे ही अपने पुरखे जो अपनी स्मृतियों को जीवित रखने के लिए यह धरोहर हमारे नाम छोड़ गए, लेकिन क्या हमारी इतनी भी ज़िम्मेदारी नहीं बनती कि हम अपने देवताओं के स्थानों को वह मान-सम्मान सूत-समेत वापस लौटाएं, जिसके वे हकदार थे?

सोचो, अगर कोई 5 फुट 6 इंच का, उत्तर भारत के लोगों के रंग से अधिक सवले रंग का, धर्म का मुस्लिम के.के. मोहम्मद करल से नहीं आया होता, तो आज बटेधर में खंडित पड़े इस मलबे को कौन पोषित करता? जब मैंने पहली बार उस प्रांगण में प्रवेश किया, तो मेरी रूढ़ में रेंगता खून मानो रुक सा गया हो। मैं एक मंदिर से दूसरे मंदिर विस्मय भरे



भाव से घूमता रहा। मैं सोच रहा था कि वह कौन दुष्ट होगा जो इन मंदिरों को उजाड़ गया। जैसे जेट आते-आते खेत उजड़ जाते हैं, रातों-रात आगजनी से अमेज़न के जंगल उजड़ जाते हैं, तेज़ धूप से कई पोखर उजड़ जाते हैं, और युवावस्था में पति की मृत्यु से एक सुहागन महिला की ज़िंदगी उजड़ जाती है। वैसे ही बटेधर की ये खंडित, टूटी-फूटी मूर्तियाँ विधवा हो गईं, जो कभी पार्वती के रूप में शिव की आर्धांगिनी थीं। मैं अपने मुँह में आए कड़वे घूँट को बार-बार पिए जा रहा था, जैसे बटेधर के वे मंदिर मुझसे कुछ हिसाब माँग रहे हों।

मेरे लिए ये मंदिर, पवित्र तीर्थ हैं... पवित्र तीर्थ!

जो कुछ 100 मंदिर पुनर्जीवित हो चुके हैं, उन्हें भी आज के ‘इस्तुतिमिश, महमूद गजनवी, औरंगज़ेब और अलाउद्दीन खिलजी’ नष्ट करने पर तुले हैं। पूरा इलाका खनन मॉर्निया की चपेट में है। मॉर्निया पहाड़ों में चढ़ानों को तोड़ने के लिए भारी-भरकम ब्लास्ट करते हैं, जिससे पैदा होने वाला कानून इन प्राचीन मंदिरों में दरारें पैदा कर रहा है।

से उनका भरोसा उठने लगता है। हालांकि जल्दी ही उन्हेड्डु समझ आ जाता है कि अगला है ही रोतले मिजाज वाला प्राणी, इसकी ज्ञानवाणी को गंभीरता से लेने का नहीं।

और अंत में प्रणम्य हैं वे तमाम प्रतिभाशाली कला साधक भी जिनके जिक्र के बगैर यह अफसाना अधूरा रहेगा,ये बंदे बेहद मनोयोग से नित नए नशरत की मानिंद नुकीले,जहर बुझे,बजबजजाते,नकारात्मक संदेश खोजते हैं, तकनीक की मदद से इनका रंग रोगन,चित्रांकन करते हैं। कुछ हेलनहार बंदे अपने ही हुनर से नित नए मौलिक जले करते हैं, धारदार संदेशों की नियमित आपूर्ति करते हैं। ये तमाम संदेश सोशल मीडिया के बाजार में हाथों हाथ लिए जाते हैं और दमनकारक अंग्रेषित किए जाते हैं,पतक झपकते ही ये संदेश तमाम स्क्रीनों पर चस्पा होने लगते हैं। सुधीजनों द्वारा इन्हें अपने फोन की गैलरी में आड़े वक्त के लिए कायदा सहजंकर रखा जाता है,और यथा अवसर इनका उपयोग किया जाता है। इन साधकों के सौजन्य से हो रही असीमित आपूर्ति की बदौलत वाट्सएप के ये अखाड़े गुलजार हैं और निरंतर फल फूल रहे हैं।



मुद्दा

डॉ. भूपेन्द्र कुमार सुल्लेरे

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।



एक देश, एक संविधान और एक समान न्याय व्यवस्था ही लोकतंत्र की वास्तविक आत्मा है। जब नागरिकों के अधिकार धर्म, पंथ और संप्रदाय के आधार पर नहीं, बल्कि समान नागरिकता के आधार पर निर्धारित होते हैं, तभी राष्ट्र सशक्त और समरस बनता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ विविध धर्म, भाषाएं, संस्कृतियाँ, परंपराएं और जीवन पद्धतियाँ सहस्राब्दियों से साथ-साथ विकसित हुई हैं। यही विविधता भारत की शक्ति भी है और उसकी विशिष्ट पहचान भी। किंतु इस विविधता के बीच संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की थी, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार, समान अवसर और समान न्याय प्राप्त हो। इसी उद्देश्य से भारतीय संविधान के नीति-निर्देशक तत्वों में अनुच्छेद 44 के माध्यम से राज्य को समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code – UCC) लागू करने का निर्देश दिया गया।

आज स्वतंत्रता के लगभग आठ दशक बाद यह विषय पुनः राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में है। विशेष रूप से मध्यप्रदेश सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता के अध्ययन और क्रियान्वयन के लिए उच्च स्तरीय समिति गठित किए जाने के बाद यह चर्चा और अधिक प्रासंगिक हो गई है। यह केवल एक विधिक सुधार का विषय नहीं है, बल्कि संविधान, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, राष्ट्रीय एकता और आधुनिक भारत के निर्माण से जुड़ा व्यापक प्रश्न है।

समान नागरिक संहिता का तात्पर्य ऐसे समान नागरिक कानूनों से है जो देश के सभी नागरिकों पर बिना किसी धार्मिक भेदभाव के समान रूप से लागू हों। वर्तमान में भारत में विवाह, तलाक, भरण-पोषण, गोद लेना, उत्तराधिकार, संपत्ति का बंटवारा और पारिवारिक संबंधों से जुड़े अनेक मामलों में विभिन्न धार्मिक समुदायों के लिए अलग-अलग व्यक्तिगत कानून (Personal Laws) लागू हैं। उदाहरण के लिए हिंदुओं के लिए हिंदू विवाह अधिनियम एवं हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, मुसलमानों के लिए शरीयत आधारित व्यक्तिगत कानून, ईसाइयों के लिए भारतीय ईसाई विवाह अधिनियम तथा पारसी समुदाय के लिए पृथक वैवाहिक और पारिवारिक कानून लागू हैं। समान नागरिक संहिता का उद्देश्य इन सभी अलग-अलग व्यक्तिगत कानूनों के स्थान पर एक ऐसा नागरिक कानून लागू करना है जो सभी नागरिकों के लिए समान रूप से लागू हो।

यह समझना आवश्यक है कि UCC का संबंध धार्मिक पूजा-पद्धति, उपासना, धार्मिक अनुष्ठानों या आस्था से नहीं है। इसका संबंध केवल नागरिक जीवन के उन पहलुओं से है जो विवाह, परिवार, संपत्ति और उत्तराधिकार से जुड़े हैं। इसलिए इसे धार्मिक हस्तक्षेप के बजाय नागरिक अधिकारों की समान व्यवस्था के रूप में देखा जाना चाहिए।

भारत का संविधान केवल शासन का दस्तावेज नहीं,

बाल काव्य

वह कागज की कश्ती, वह बारिश का पानी, समस्त्रष्णि का आसमान में देखना, गर्मियों की छुट्टी में छत पर सोना, तारे देखना,रबड़ की गेंद जो हमें बचपन में यूँ ही मिल जाती थी लेकिन आज के बचपन में मोटी रकम खर्च करने पर भी नसीब नहीं होती क्योंकि यह जो पीढ़ी है, वह न तो छत पर सोती है,न मिट्टी में खेलती है ।वह तो वर्चुअल दुनिया के सहारे बड़ी होती है। जिसके पास दुनिया की बेहतरीन सुविधाएँ हैं लेकिन वह मजा नहीं,जो हमें न भूलने वाला सबक सिखाता था।

हमें दादी और नानी की गोद मिलती थी ।वह हमें कहानी कहती थीं जिनको सुनकर संवेदनशीलता ज़िंदा रहती थी। हमारे जमाने का बाल साहित्य भी अब पढ़ने में नहीं आता। मोबाइल ने आज के बचपन को छीन लिया, लेकिन हम कोशिश करें तो भविष्य की दशा और दिशा निर्धारित करने वाला साहित्य तो रच सकते हैं।

यह विचार मुझे अनुपमा श्रीवास्तव अनुश्री की ‘संस्कृति के ध्वजवाहक’ बाल काव्य संकलन पढ़ते समय आया कि इस पुस्तक में वह सब है जो हमें चाहिए।

वह खेल, वह नजदीकी प्रकृति से, पार्क में खेल-कूद, चिड़ियाघर,तितली देखना, परिवार में परस्पर संवादात्मकता, भाषा, इतिहास, परंपरा, जड़ों से जुड़े हुए श्रेष्ठ जीवन मूल्य, जो भारतीय संस्कृति को उत्कर्ष

अध्यात्म

डॉ. परविंदर शर्मा

सहायक प्राध्यापक, श्री गुरु तेग बहादुर भारतीय सभ्यता एवं धार्मिक परंपरा केंद्र, बठिंडा

मा नव जीवन की सबसे बड़ी खोज शांति की खोज है। युगों से मनुष्य इस प्रश्न का उत्तर ढूंढता रहा है कि आत्मा को सच्ची शांति कहाँ मिलती है? इस प्रश्न का उत्तर हमारे ऋषि-मुनियों ने योग और धर्म के समिंमलन में खोजा था। जब योग और धर्म एक साथ चलते हैं, तो जीवन एक दिव्य संगीत की तरह बन जाता है जिसमें हर सांस एक राग है और हर पल एक पवित्र अनुभव करता है, धर्म केवल पूजा-पाठ या कर्मकांड का नाम नहीं बल्कि धर्म का अर्थ है वह मार्ग जो मनुष्य को उसके सच्चे स्वरूप से जोड़ता है। और योग वह साधन है जिसके द्वारा इस मार्ग पर चलना संभव होता है। दोनों मिलकर आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का कार्य करते हैं।

भारतीय दर्शन में धर्म शब्द की व्युत्पत्ति ‘धृ’ धातु से हुई है जिसका अर्थ है ‘धारण करना’। अर्थात् जो सुष्टि को, समाज को और आत्मा को धारण करे, वही धर्म है। धर्म कोई बाहरी आचरण नहीं, बल्कि एक आंतरिक अनुशासन है जो व्यक्ति के विचार, वाणी और कर्म को

यूसीसी : संवैधानिक संकल्प से सामाजिक समरसता तक

समान नागरिक संहिता का तात्पर्य ऐसे समान नागरिक कानूनों से है जो देश के सभी नागरिकों पर बिना किसी धार्मिक भेदभाव के समान रूप से लागू हों। वर्तमान में भारत में विवाह, तलाक, भरण-पोषण, गोद लेना, उत्तराधिकार, संपत्ति का बंटवारा और पारिवारिक संबंधों से जुड़े अनेक मामलों में विभिन्न धार्मिक समुदायों के लिए अलग-अलग व्यक्तिगत कानून (Personal Laws) लागू हैं। उदाहरण के लिए हिंदुओं के लिए हिंदू विवाह अधिनियम एवं हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, मुसलमानों के लिए शरीयत आधारित व्यक्तिगत कानून, ईसाइयों के लिए भारतीय ईसाई विवाह अधिनियम तथा पारसी समुदाय के लिए पृथक वैवाहिक और पारिवारिक कानून लागू हैं। समान नागरिक संहिता का उद्देश्य इन सभी अलग-अलग व्यक्तिगत कानूनों के स्थान पर एक ऐसा नागरिक कानून लागू करना है जो सभी नागरिकों के लिए समान रूप से लागू हो। यह समझना आवश्यक है कि UCC का संबंध धार्मिक पूजा-पद्धति, उपासना, धार्मिक अनुष्ठानों या आस्था से नहीं है। इसका संबंध केवल नागरिक जीवन के उन पहलुओं से है जो विवाह, परिवार, संपत्ति और उत्तराधिकार से जुड़े हैं। इसलिए इसे धार्मिक हस्तक्षेप के बजाय नागरिक अधिकारों की समान व्यवस्था के रूप में देखा जाना चाहिए।

बल्कि राष्ट्र निर्माण का दर्शन है। संविधान सभा में समान नागरिक संहिता पर विस्तृत चर्चा हुई थी। संविधान निर्माता मानते थे कि भविष्य में भारत को एक समान नागरिक व्यवस्था की ओर बढ़ना चाहिए। भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव आंबेडकर का स्पष्ट मत था कि एक आधुनिक राष्ट्र में नागरिकों के व्यक्तिगत अधिकार धर्म आधारित भिन्नताओं पर निर्भर नहीं होने चाहिए। उन्होंने माना कि राज्य को सामाजिक सुधार और समानता की दिशा में आगे बढ़ने का अधिकार और दायित्व दोनों हैं। इसी सोच के आधार पर संविधान के अनुच्छेद 44 में उल्लेख किया गया कि राज्य भारत के समस्त क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा।

भारत में व्यक्तिगत कानूनों की वर्तमान व्यवस्था का इतिहास औपनिवेशिक काल से जुड़ा हुआ है। ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों ने आपराधिक कानूनों को तो एक समान बनाया, लेकिन विवाह और पारिवारिक मामलों में धार्मिक समुदायों के अलग-अलग कानूनों को जारी रखा। स्वतंत्रता के बाद भी यह व्यवस्था काफी हद तक बनी रही। 1955-56 में हिंदू कानूनों में व्यापक सुधार किए गए, लेकिन सभी समुदायों के लिए समान नागरिक कानून नहीं बन पाए। परिणामस्वरूप आज भी भारत में नागरिक जीवन के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र धर्म आधारित अलग-अलग कानूनों द्वारा संचालित होते हैं।

समान नागरिक संहिता लागू करने की आवश्यकता सबसे पहले संविधान की मूल भावना को साकार करने के लिए है। भारतीय संविधान समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है। जब सभी नागरिक मतदान करते, कर देने और आपराधिक कानूनों का पालन करने में समान हैं, तो विवाह, तलाक और उत्तराधिकार जैसे मामलों में अलग-अलग कानूनों का औचित्य स्वाभाविक रूप से चर्चा का विषय बनता है। UCC संविधान की समानता की भावना को व्यवहारिक रूप देने का माध्यम बन सकता है।

महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा भी UCC की

आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण आधार है। भारत में व्यक्तिगत कानूनों के कारण कई बार महिलाओं को विवाह, तलाक, संपत्ति और उत्तराधिकार के मामलों में असमान परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। समान नागरिक संहिता महिलाओं को समान कानूनी अधिकार प्रदान करने, संपत्ति में समान हिस्सेदारी सुनिश्चित करने, विवाह और तलाक के मामलों में समान सुरक्षा उपलब्ध कराने तथा लैंगिक न्याय को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण



कदम सिद्ध हो सकती है। वास्तव में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता की दृष्टि से UCC को एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुधार माना जा रहा है।

राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुदृढ़ करने की दृष्टि से भी UCC का विशेष महत्व है। एक राष्ट्र में नागरिकों के लिए अलग-अलग नागरिक कानून होने से कभी-कभी कानूनी और सामाजिक जटिलताएं उत्पन्न होती हैं। समान नागरिक संहिता यह संदेश देती है कि राष्ट्र में नागरिकता सर्वोपरि है और सभी नागरिक कानून की दृष्टि से समान हैं। इससे राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और संवैधानिक राष्ट्रवाद को मजबूती मिल सकती है।

न्यायिक व्यवस्था को सरल बनाने में भी UCC महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विभिन्न व्यक्तिगत कानूनों के कारण न्यायालयों को अनेक जटिल विवादों

और कानूनी व्याख्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि एक समान नागरिक कानून लागू होता है तो कानूनी अस्पष्टता कम होगी, मुकदमों में कमी आएगी और न्यायिक प्रक्रिया अधिक सरल एवं प्रभावी बन सकेगी।

आज का भारत तेजी से बदल रहा है। शिक्षा, शहरीकरण, महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, अंतर्धार्मिक विवाहों में वृद्धि और बदलती सामाजिक संरचना ने नागरिक जीवन को नया स्वरूप दिया है। ऐसे में नागरिक कानूनों का आधुनिक, वैज्ञानिक और समान स्वरूप समय की आवश्यकता बन गया है। विकसित भारत की परिकल्पना तभी सार्थक हो सकती है जब सामाजिक न्याय और विधिक समानता भी उसके साथ-साथ आगे बढ़े।

भारत का सर्वोच्च न्यायालय भी समय-समय पर समान नागरिक संहिता की आवश्यकता पर बल देता रहा है। शाहबानो प्रकरण (1985) में न्यायालय ने महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करते हुए UCC की आवश्यकता का उल्लेख किया था। इसीप्रकार सर्ला मुद्दल प्रकरण (1995) में भी सर्वोच्च न्यायालय ने समान नागरिक संहिता लागू करने की दिशा में गंभीर विचार की आवश्यकता व्यक्त की थी। न्यायालय

का मत रहा है कि समान नागरिक कानून राष्ट्रीय एकता और न्याय व्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकते हैं। भारत में गोवा राज्य को समान नागरिक संहिता के एक व्यावहारिक उदाहरण के रूप में देखा जाता है। वहां विवाह पंजीकरण, संपत्ति अधिकार और उत्तराधिकार से संबंधित अनेक प्रावधान सभी समुदायों पर समान रूप से लागू होते हैं। इसलिए गोवा मॉडल को अक्सर UCC के संदर्भ में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता के अध्ययन और सुझावों के लिए उच्च स्तरीय समिति का गठन किया जाना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। राज्य सरकार का उद्देश्य विभिन्न समुदायों से संवाद स्थापित करना, सामाजिक एवं कानूनी प्रभावों का अध्ययन करना, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की

संस्कृति के ध्वजवाहक: बच्चों के हाथों में होनी चाहिए किताब

प्रदान करते हैं। इस विषय में अपनी बात में लेखिका ने लिखा है- रचनाएँ स्वयं बोलती हैं उदाहरण के लिए- ‘हम बच्चे’ शीर्षक से वह कहती हैं- साथ देती है हरी- भरी प्रकृति माँ उड़ती रंगीन तितलियाँ और सुहानी बदलिया। चमकता सूरज और इन सब के साथ डूबी- डूबी हमारी मस्तियाँ। पाएँगे जो लक्ष्य है - इस कविता में आज के बच्चों को सही दिशा में निर्देशित किया गया है - ‘बिना प्रयास सफलता मिलती नहीं ऐसा कोई शॉर्टकट, ऐसी कोई मिस્ટ्री नहीं गाड़ना है सफलता के झंडे बदलना है हिस्ट्री तो समझनी पड़ेगी सही लक्ष्य की जियोग्राफी भावनाओं की केमिस्ट्री।’ ‘संस्कृति के ध्वजवाहक’ कविता में वह कहती हैं-

हम संस्कृति के ध्वजवाहक संसार जगाने आए । सदुणों की अखंड ज्योति से अंधकार मिटाने आए।।



राष्ट्रवाद का उद्घोष करते हुए वह 'धन्य धरा भारत

की’ कविता में कहती हैं - जीवन को सुरभित करती मन को पवित्र करती आवरण को शुद्ध करती उत्तरोत्तर आदमी से देवत्व की ओर प्रेरित करती भारत की यह दिव्य धरती। वहीं ‘नन्हे दीये’ कविता में ‘आत्म दीपो भव’ का भाव और ‘सत्यमेव जयते’ की हुंकार है- हौसला और संकल्प से सजे वतन की बुनियाद हैं हम। संस्कारों का लिबास पहनकर गढ़ेंगे भारत का गणतंत्र अग्रतिमा।। वहीं बच्चों के गैजेट प्रेम पर भी कहीं ‘मोबाइल का हॉलिडे’ है तो कहीं एक नटखट तंज भी - हम जब गैजेट्स चलाते हैं अच्छे-अच्छों के होश उड़ जाते हैं। सब ने मानी हमारी बुद्धिमानि नानी को भी याद आ जाती है नानी! प्रकृति का आँगन, माँ तू ही तो है, छुट्टी, नई कहानी, मेरी दीपशिखा,दशहरा, मोबाइल का हॉलिडे, मैं और मेरी डायरी, घर में संवाद ,अच्छी पुस्तक- सच्ची मित्र, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, जीवन है अनमोल, पेड़ लगाए, हम जागेंगे- जगाएँगे, हम हैं नई पीढ़ी आदि शीर्षक से लिखी कविताएँ क्या संदेश देती

हैं पाठक स्वयं पढ़कर सोचें कि ऐसी पुस्तक अलम्रीरा की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं है। यह गंतव्य और मंतव्य से भरपूर है यानी इन पुस्तकों को बच्चों के हाथों में पहुँचना बहुत जरूरी है ताकि अंदर अपनी परंपरा, धर्म,संस्कृति, भाषा, राष्ट्रियता, संवेदनशीलता के बीज अधिरोधित हो सकें।

अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि इसे पढ़ कर बच्चों को ऐसा अनुभव होगा जितना हमारा अपना था और वह अपने परिवेश और समसामयिक स्थितियों से भी खुद को जोड़ पाएँगे। ज्ञानवर्धक और मनोरंजन शैली में लिखी हुई ये कविताएँ हमारी मित्र बनकर यह विवेक देती है कि हमें कैसे अपने आप को सकारात्मक, दैविकवान, शिक्षित और सुसंस्कृत बनाना है। सुंदर कलेवर, काव्यभावानुकूल सुंदर चित्र संयोजन,ग्लेज्ड पेजेज के साथ यह पुस्तक बहुत आकर्षक बन पड़ी है।

आज बच्चे जो सीख रहे हैं, वह सिंगल फेमिली के दौर की बातें हैं जहाँ कहानियों का कोई स्थान नहीं लेकिन अब वह समय दूर नहीं जब हम ऐसे साहित्य की तलाश करेंगे जो संस्कार दे और हमें अपनी संस्कृति से जोड़कर रखें।

रचनाकार- अनुपमा श्रीवास्तव अनुश्री पुस्तक मूल्य- 125 उपलब्धता -फ्लिपकार्ट प्रकाशक- समृद्ध प्रकाशन,दिल्ली

आत्मा की शांति: योग और धर्म का पवित्र संगम

शुद्ध करता है। ‘गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी कहते है श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।’ (गीता 3:35)

अर्थात् अपना धर्म, चाहे कितना भी अपूर्ण हो, दूसरे के धर्म से श्रेष्ठ है। यह सिद्धांत हमें बताता है कि धर्म व्यक्तिगत है, आत्मा की पुकार है और जीवन जीने की एक पवित्र शैली है। योग शब्द संस्कृत के ‘युज्’ धातु से बना है जिसका अर्थ है जोड़ना। योग का वास्तविक उद्देश्य जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ना है। महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में कहा ‘योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः’ अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। अष्टांग योग के आठ अंग : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन हैं। इनमें से यम और नियम सीधे धर्म से जुड़े हैं। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये यम के पाँच अंग हैं जो धार्मिक जीवन की नींव हैं।

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है। यह एक समग्र जीवन पद्धति है जो शरीर, मन और आत्मा तीनों को साधती है। जब कोई व्यक्ति योग के माध्यम से अपने मन



को शांत करता है, तो उसे धर्म का वास्तविक अर्थ स्वतः समझ में आने लगता है। योग और धर्म का संबंध वैसा ही है जैसे नदी और उसके किनारों का। नदी का प्रवाह

योग है और किनारे धर्म हैं। यदि किनारे न हों तो नदी का जल बिखर जाएगा, और यदि जल न हो तो किनारे व्यर्थ हैं। दोनों मिलकर जीवन को एक सार्थक दिशा देते हैं।

धर्म हमें बताता है कि क्या करना चाहिए सत्य बोले, प्रेम करो, सेवा करो। और योग हमें वह शक्ति देता है जिससे हम ऐसा कर सकें। ध्यान और प्राणायाम के अभ्यास से मन इतना शांत और स्थिर हो जाता है कि धर्म का पालन स्वाभाविक रूप से होने लगता है। तब किसी बाहरी दबाव की आवश्यकता नहीं होती। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं को ‘योगेश्वर’ कहा और गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग तथा राजयोग का विस्तृत वर्णन किया। यह स्पष्ट करता है कि योग और धर्म अलग नहीं हैं: योग ही धर्म का व्यावहारिक रूप है।

आज के भागदौड़ भरे जीवन में मनुष्य तनाव, अवसाद और आत्मिक शुन्यता से जूझ रहा है। भौतिक सुख-सुविधाएँ होने के बावजूद मन अशांत है। इसका

कारण यह है कि हमने योग और धर्म को अपने जीवन से अलग कर लिया है। यदि हम प्रतिदिन केवल 30 मिनट योगाभ्यास करें और धर्म के मूल सिद्धांतों सत्य, प्रेम, करुणा और सेवा को अपने दैनिक जीवन में उतारें, तो हमारा जीवन बदल सकता है। योग से शरीर और मन स्वस्थ होते हैं, और धर्म से जीवन को एक उद्देश्य और दिशा मिलती है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कि पूरा विश्व अब योग की शक्ति को मान रहा है। भारत ने जो ज्ञान हजारों वर्षों पहले दिया था, आज वह विश्व के कोने-कोने में फैल रहा है।

योग और धर्म का यह पवित्र संगम आत्मा की शांति का सर्वोत्तम मार्ग है। जब हम योग के द्वारा अपने मन को साधते हैं और धर्म के द्वारा अपने जीवन को दिशा देते हैं, तो हमारे भीतर एक अद्भुत परिवर्तन होता है। भय दूर होता है, क्रोध शांत होता है, और जीवन में एक दिव्य आनंद का अनुभव होता है। आत्मा की यह शांति किसी बाहरी वस्तु में नहीं मिलती। यह तो हमारे भीतर ही छुपी है और योग व धर्म वे दिव्य चाबियाँ हैं जो इस खजाने को खोल देती हैं। इसलिए आइए, हम सब मिलकर इस पवित्र मार्ग पर चलें और अपने जीवन को सार्थक और आनंदमय बनाएँ। ‘योगः कर्मसु कौशलम्’ (गीता 2:50) (योग ही कर्मों में कुशलता है)

संक्षिप्त समाचार

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने प्रभावी कदम उठाएं: कलेक्टर विश्वकर्मा



रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा जिले में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने, नागरिकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने किए जा रहे कार्यों और गतिविधियों की समीक्षा की गई। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा तथा एसपी श्री आशुतोष गुप्ता द्वारा गत बैठक के पालन प्रतिवेदन अनुसार संबंधित अधिकारियों से अभी तक की गई कार्यवाही की जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा तथा एसपी श्री गुप्ता ने जिले में ब्लैक स्पॉट के रूप में चिन्हित किए गए दुर्घटना संभावित स्थलों के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए सड़क दुर्घटनाओं को रोकने विभिन्न उपायों पर चर्चा करते हुए सड़क दुर्घटनाओं को रोकने शीघ्र कार्यवाही के निर्देश दिए। बैठक में स्कूल, कॉलेज चिकित्सालय सहित अन्य स्थलों के समीप सड़कों पर कैट आई, विभिन्न संकेतक चिन्ह या साइन बोर्ड, रैलिंग लगाने के भी निर्देश दिए। बैठक में स्कूल, कॉलेजों तथा सार्वजनिक स्थलों पर भी यातायात नियमों तथा सड़क सुरक्षा संबंधी जागरूकता गतिविधियां आयोजित किए जाने पर भी चर्चा की गई। साथ ही ट्रिप एण्ड रन मोटरयान दुर्घटना पीड़ित प्रतिकर योजना के प्रकरणों पर चर्चा कर प्रभावितों को शीघ्र आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने हेतु निर्देशित किया गया। बैठक में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री दीपक नायक, यातायात प्रभारी लता मालवीय सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

नारकोटिक्स एवं नशीली दवाओं की रोकथाम हेतु जिला स्तरीय समिति की बैठक सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। जिले में नारकोटिक्स एवं नशीली दवाओं की रोकथाम हेतु कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसमें कलेक्टर श्री विश्वकर्मा तथा पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता द्वारा जिले में नारकोटिक्स एवं नशीली दवाओं की रोकथाम हेतु स्वास्थ्य विभाग तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों को संयुक्त रूप से मेडिकल की दुकानों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि मेडिकल दुकानों पर डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन के बिना दवाओं या सीरप का वितरण नहीं हो, यह भी सुनिश्चित कराएं। इसी प्रकार बंद पड़ी फैक्ट्रियों, कारखानों आदि उद्योगिक इकाईयों का पुलिस और राजस्व अधिकारियों के साथ निरीक्षण करने के निदेश दिए।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी के द्वारा थाना कोतवाली जिला विदिशा में दर्ज अपराध क्रमांक 112/2025 की विभिन्न धाराओ के फरार आरोपियों में इदरीश बेदी पुत्र नईम अख्तर निवासी मालवीय वार्ड नम्बर 16 व हनुमान नगर लोधीपुरा बुरहानपुर जिला बुरहानपुर तथा सिविल लाइन जिला विदिशा में दर्ज अपराध क्रमांक 303/2026 के फरार आरोपी हेमंत पुत्र स्व0 नारायण प्रसाद पचौरीनिवासी ए- 21 बालाजी एवेन्यू थाना सिविल लाइन विदिशा की सूचना देने वालों को क्रमशः पांच-पांच हजार रूपए नगद राशि देने की उद्घोषणा की है।

योजनाओं का क्रियान्वयन पूरी संवेदनशीलता और गंभीरता से किया जाए: कलेक्टर विश्वकर्मा

रायसेन (निप्र)। जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की बैठक कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में उन्होंने बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत प्रकरणों, किशोर न्याय बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत प्रकरणों, खुला आश्रय गृह में लाभान्वित बालकों, संयंसरण योजना अंतर्गत लाभान्वित बालकों और पीएम केयर अंतर्गत लाभान्वित बालकों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि योजनाओं का क्रियान्वयन पूरी संवेदनशीलता और गंभीरता से किया जाए। बैठक में जानकारी दी गई कि बाल कल्याण समिति के समक्ष अप्रैल 2026 से जून 2026 तक प्राप्त 44 प्रकरणों में से 38 प्रकरण निराकृत हो गए हैं तथा शेष प्रकरणों में कार्यवाही की जा रही है। इसी प्रकार जिले में एकमात्र खुला आश्रय गृह, अशासकीय संस्था सियावास समाज कल्याण समिति बेगमगंज में संचालित है। जिसमें 25 बालकों को अस्थायी आश्रय प्रदान कर उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है। संयंसरण योजना की समीक्षा के दौरान जानकारी दी गई कि जिले में योजना के तहत 719 बालकों का चिह्नकन किया गया है। इन बालकों को शासन से प्राप्त बजट अनुसार प्रतिमाह चार हजार रू प्रति बालक राशि प्रदान की जाती है। इसी प्रकार कोविड- 19 अंतर्गत जिले में 19 बालकों को पांच हजार रू प्रति बालक के मान से राशि प्रदान की जाती है। पीएम केयर योजना अंतर्गत जिले में 02 बालकों को लाभान्वित किया जा रहा है।

28 जून को राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान का होगा शुभारंभ

सीहोर (निप्र)। जिले में 28 जून से 30 जून तक राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान संचालित किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत 0 से 5 वर्ष आयु वर्ग के जिले के 1,82,084 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अभियान के प्रथम दिवस में सभी बूथों पर बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई जाएगी, जबकि आगामी दो दिनों तक विभाग की टीमें घर-घर जाकर छूटे हुए बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाएंगी। सीएमओओ डॉ सुधीर डेवरिया ने बताया कि सभी विभागीय अधिकारियों-कर्मचारियों को निर्देश दिए कि गए हैं कि अभियान संबंधी सभी तैयारियां समयपूर्व सुनिश्चित कर ली जाए और पोलियो की खुराक से एक भी बच्चा न छूटे।

■ इछवर एवं भैरुंदा में जनकल्याण शिविर आयोजित

सुशासन, पारदर्शिता और जनसेवा की भावना के साथ कार्य कर रही प्रदेश सरकार : राजस्व मंत्री

सरकार का लक्ष्य अतिम

पवित में खड़े व्यक्ति

योजनाओं का लाभ पहुंचाना है : केन्द्रीय कृषि मंत्री

सीहोर (निप्र)। इछवर एवं भैरुंदा में जनकल्याण शिविर आयोजित किया गया। इछवर में आयोजित शिविर में केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और राजस्व मंत्री श्री करणसिंह वर्मा शामिल हुए। इस अवसर उन्होंने जन चौपाल आयोजित कर नागरिकों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को त्वरित निराकरण के निर्देश दिए। इसके साथ ही शिविर निरीक्षण कर हितग्राहियों को हितलाभ भी वितरित किए। शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा शिविर लगाकर नागरिकों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सरकार का उद्देश्य अंतिम पवित में खड़े व्यक्ति तक विकास और जनकल्याण की योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि जनकल्याण शिविरों के माध्यम से शासन स्वयं जनता के बीच पहुंचकर उनकी



समस्याओं का समाधान कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में केंद्र एवं राज्य सरकार गरीब, किसान, मजदूर, महिला, युवा एवं वंचित वर्ग के उत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। किसानों की आय बढ़ाने, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करने तथा आधारभूत सुविधाओं के विस्तार के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि खरीफ सीजन के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध है और किसानों को इसकी कमी नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने किसानों से सॉल्व हेल्थ कार्ड बनवाने और मिट्टी में जिन तत्वों की कमी हो, उसी के अनुसार खाद का उपयोग करने की अपील

की। उन्होंने कहा कि सरकार निरंतर सड़कों के माध्यम से गांवों में विकास की धारा को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री आवास योजना को लेकर कहा कि, इस योजना में सबसे अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। उन्होंने बताया कि आवास योजना के लिए सर्वेक्षण का कार्य पूरा हो चुका है और अब पात्रता का भौतिक सत्यापन किया जा रहा है। जिले में लगभग 21 हजार लोगों का सर्वे किया गया है। सरकार का प्रयास है कि जिन परिवारों के पास रहने के लिए पक्का मकान नहीं है, उन्हें योजना का लाभ मिले और कोई भी पात्र व्यक्ति इससे वंचित न रहे।

इछवर में आयोजित कार्यक्रम में राजस्व मंत्री श्री करणसिंह वर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर जिलेभर में आयोजित हुए सामूहिक योग कार्यक्रम

स्वस्थ समाज का दिया संदेश

सीहोर (निप्र)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिलेभर में उत्साह एवं उमंग के साथ सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किए गए। सीहोर जनपद कार्यालय, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, जिला न्यायालय, आरएफे कॉलेज, कन्या शिक्षा परिसर, महिला आईटीआई, डाइट, नगर परिषद रेहटी, जिला अस्पताल, वर्धमान प्राइवेट लिमिटेड, ट्राइडेंट ग्रुप बुधनी सहित अनेक शासकीय एवं निजी संस्थानों में योगाभ्यास कर स्वस्थ एवं निरोगी जीवन का संदेश दिया गया। कार्यक्रमों में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा बड़ी संख्या में नागरिकों ने सहभागिता कर योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का संकल्प लिया।

सीहोर जनपद कार्यालय में आयोजित योग कार्यक्रम में जनपद अध्यक्ष श्रीमती नावडी बाई, जनपद पंचायत सीईओ श्रीमती नमिता बघेल, एपीओ श्री गुलाब अहिरवार सहित माय भारत एवं हिताय एनजीओ के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने सामूहिक रूप से योगासन एवं प्राणायाम किए तथा योग के महत्व को समझते हुए नियमित अभ्यास करने का संकल्प



लिया। इसी प्रकार जिला न्यायालय परिसर में आयोजित योग कार्यक्रम में विशेष न्यायाधीश श्री हेमंत जोशी, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्रीमती विनीता गुप्ता, न्यायाधीश श्री दीपेन्द्र मालू सहित अधिवक्तागण, लीगल एड डिफेंस कार्डसिल्स तथा न्यायालय के अधिकारी-कर्मचारी शामिल हुए। कार्यक्रम में योग विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में विभिन्न योगासन एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया गया। प्रतिभागियों ने योग को तनावमुक्त एवं स्वस्थ जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी बताते हुए इसके नियमित अभ्यास पर बल दिया। जिले के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों,

स्वास्थ्य संस्थाओं एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों में भी सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित किए गए। आरएफे कॉलेज, कन्या शिक्षा परिसर, महिला आईटीआई एवं डाइट में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास किया। वहीं जिला अस्पताल में चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों ने योग कर स्वास्थ्य जागरूकता का संदेश दिया। रेहटी नगर परिषद, वर्धमान प्राइवेट लिमिटेड तथा ट्राइडेंट ग्रुप बुधनी में भी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं नागरिकों ने बड़ी संख्या में सहभागिता करते हुए योग के महत्व को रेखांकित किया।

पीएमएफएमई योजना से मिले 27 लाख के लोन से जयप्रकाश ने शुरू की दूध गंगा डेयरी

प्रत्येक माह लगभग 40 हजार की हो रही आमदनी, 20 लोगों को मिला रोजगार



बैतूल (निप्र)। नौकरी की तलाश में लंबे समय तक भटकने के बाद मुलताई तहसील के उड्डा पंखा निवासी श्री जयप्रकाश चिकाने ने हार नहीं मानी। मध्यप्रदेश शासन की पीएमएफएमई योजना का लाभ लेकर उन्होंने दूध गंगा डेयरी की स्थापना की और आज न केवल खुद आत्मनिर्भर बने हैं, अपितु करीब 20 लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं। दूध गंगा डेयरी संचालक जयप्रकाश चिकाने ने बताया कि योजना के तहत आवेदन करने के बाद उन्हें बैंक से 27 लाख रुपए का ऋण मिला, जिसमें

10 लाख रुपए का अनुदान शामिल है। इस राशि से उन्होंने डेयरी व्यवसाय शुरू किया। वर्तमान में उनकी डेयरी आसपास के 15 से 20 गांवों से प्रतिदिन करीब 4 हजार लीटर दूध का संग्रहण करती है।

उन्होंने बताया कि संग्रहित दूध से दही, घी, मक्खन, पनीर, खोवा और मिठाई जैसे उत्पाद तैयार किए जाते हैं, जिन्हें स्थानीय दुकानों में बेचा जाता है। इसके अलावा नर्मदापुरम की एक निजी कंपनी को भी दूध की आपूर्ति की जा रही है। जयप्रकाश का कहना है कि सभी

खर्च निकालने के बाद उन्हें करीब 40 हजार रुपए प्रतिमाह की आय हो रही है।

डेयरी में काम कर रहे युवाओं को भी फायदा

डेयरी में कार्यरत देवेन्द्र पोटफोड़े पिछले तीन वर्षों से यहां काम कर रहे हैं। उन्हें प्रतिमाह 12 हजार रुपए मानदेय मिलता है। देवेन्द्र ने बताया कि डेयरी में काम करने का फायदा यह है कि नौकरी के साथ वे अपने खेत और घरेलू काम भी देख लेते हैं।

उन्होंने बताया कि वे सुबह 6 बजे से 10 बजे तक और शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक डेयरी में काम करते हैं। बाकी समय खेती और अन्य कार्यों में लगा लेते हैं। उनका कहना है कि किसी निजी कंपनी में नौकरी करने पर पूरा समय देना पड़ता, जबकि यहां रोजगार के साथ खेती भी आसानी से हो जाती है। दूध गंगा डेयरी के संचालक जयप्रकाश चिकाने ने पीएमएफएमई योजना के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव का आभार व्यक्त किया है।

मेडिकल कॉलेज में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजन हुआ

विदिशा (निप्र)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, विदिशा में योग समिति के तत्वावधान में भव्य एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों, चिकित्सकों, शिक्षकों तथा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए योग के महत्व को आत्मसात किया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सभी को स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में फिगरलाइन फिटनेस सेंटर, विदिशा की प्रोप्राइटर श्रीमती अंजली पंडित, योग प्रशिक्षक एवं आयुर्वेद-प्राकृतिक चिकित्सा



विशेषज्ञ श्री नीलेश विश्वकर्मा तथा विधान श्रीवास्तव उपस्थित रहे। अतिथियों ने प्रतिभागियों को विभिन्न योगासनों, प्राणायाम एवं ध्यान की विधियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने योग के शारीरिक,

मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि नियमित योगाभ्यास न केवल तनाव को कम करता है, बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, मानसिक एकाग्रता विकसित करने तथा जीवन में सकारात्मक

ऊर्जा का संचार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषज्ञों ने कहा कि वर्तमान भागदौड़ भरी जीवनशैली में योग एक प्रभावी साधन है, जो व्यक्ति को शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से सशक्त बनाता है।

उन्होंने सभी प्रतिभागियों से योग को दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने का आग्रह किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. मनीष निगम, योग प्रमुख डॉ. नरेंद्र पटेल सहित अन्य वरिष्ठ चिकित्सक एवं फैकल्टी सदस्य उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में योग को समग्र स्वास्थ्य संवर्धन का सशक्त माध्यम बताते हुए कहा कि स्वस्थ समाज के निर्माण में योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को नियमित रूप से योग करने

तथा इसके संदेश को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने का आह्वान किया।कार्यक्रम के सफल आयोजन एवं छात्र समन्वयन में डॉ. केशव बंसल, धनीराम दुबे, राशी विश्वकर्मा, वंशिका कौशिक, चेतन महाजन एवं राजा रघुवंशी की उत्तरेखनीय भूमिका रही। योग समिति के सदस्यों तथा प्रतिभागियों के सक्रिय सहयोग से कार्यक्रम सुचारुवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम के समापन पर योग समिति द्वारा सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। साथ ही सभी ने स्वस्थ, संतुलित एवं जागरूक समाज के निर्माण के लिए नियमित योगाभ्यास करने और योग के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का सामूहिक संकल्प लिया गया है।

